लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा.

दिनांक :- 1-6-1996

हम संस्तुति करते है कि प्रस्तुतलघुशोध – प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

(डॉ. गजानन सुर्वे)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा.

(श्री. पुरुषोत्तम शेठे)
प्राचार्य
लालबहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा.

00000000000 xxxx 00000000000

xxx **प्र ख्या प न** xxx

"विष्णु प्रभाकर 'तट के बंधन' उपन्यास का अनुशीलन"

यह शोध–प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्, के लघु शोध–प्रबंध के रुप में प्रस्तुत की जा रही हैं । यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई ।

स्थान :– फलटण

दिनांक :– 3७।५।८६

कु. जयश्री रामचंद्र लोणकर
शोध छात्रा

/// प्रमाणपत्र ///

मैं प्रा.डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मुधोजी महाविद्यालय, फलटण यह प्रमापित करता हूँ कि, कु. **जयश्री रामचंद्र लोणकर** ने शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापूर की एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए **"विष्णु प्रभाकर के 'तट के बंधन' उपन्यास का अनुशीलन"** लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में परिश्रम के साथ सफलता पूर्वक पूरा किया है । शोधार्थी की यह मौलिक कृति है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध कला विद्या शाखा (फॅकल्टी ऑफ आर्टस्) तथा हिंदी विषय से संबंधित "उपन्यास" विधा के अंतर्गत समाविष्ट है ।

मैं संस्तुति प्रस्तुत करता हूँ कि इसे परीक्षा के हेतू अग्रेषित किया जाए ।

शोध निर्देशक

(प्रा.डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा)
प्राध्यापक, हिंदी विभाग
मुधोजी महाविद्यालय, फलटण

भूमिका

हिंदी के गद्य साहित्य में साहित्यकारों ने मानव के जीवन के सभी पहलूओं का विस्तृत चित्रण किया है । हिंदी के गद्य साहित्य में मुझे रुचि होने से मैंने अनेक उपन्यास और कहानी संग्रह पढे हैं । किंतु विष्णु प्रभाकर जी का उपन्यास – साहित्य पढकर मैं विशेष प्रभावित हो गई, क्योंकि उनके उपन्यास–साहित्य में मध्यवर्ग के जीवन का और नारी की विविध समस्याओं का वास्तविक चित्रण किया है । अतः मैंने एम.फिल. के लघु शोध–प्रबंध का विषय विष्णु प्रभाकर के उपन्यास पर हो ऐसा निश्चय किया । शोध निर्देशक आदरणीय गुरुवर्य प्रा.डॉ.राजेंद्र शहा जी ने मेरी रुचि देखकर मुझे प्रोत्साहित कर लघु शोध–प्रबंध के लिए "विष्णु प्रभाकर के "तट के बंधन" उपन्यास का अनुशीलन" यह विषय निश्चित किया ।

"विष्णु प्रभाकर के "तट के बंधन" "उपन्यास का अनुशीलन" लघु शोध–प्रबंध को मैंने पाँच अध्यायों में विभाजित किया है । प्रथम अध्याय में विष्णुजी का जीवनवृत्त, व्यक्तित्व और कृतित्व है । उसमें उनकी जन्म तिथि, जन्म स्थान, माता–पिता, परिवार, शिक्षा–दीक्षा, व्यक्तित्व और रचनाओं की चर्चा की है । द्वितीय अध्याय में वस्तुविधान के अंतर्गत उपन्यास की कथावस्तु की चर्चा की हैं । उसमें कथावस्तु की पृष्ठभूमि, स्थान–काल की एकता तथा घटना ऐक्य और उसमें लेखक की भूमिका तथा उसके माध्यम से नारी की विविध समस्याएँ और देश की महत्वपूर्ण समस्याओं का विवेचन किया है । तृतीय अध्याय में उपन्यास में चित्रित प्रधान और गौण पुरुष तथा नारी पात्रों का चरित्र चित्रण किया है । उसमें उनकी स्वभावगत तथा चारित्रिक विशेषताओं का विस्तृत विवेचन किया है । चतुर्थ अध्याय में उपन्यास के शिल्पविधान के अंतर्गत उपन्यास के संवाद, भाषाशैली की विशेषताएँ, देश, कालवातावरण के संयोजन का तथा उद्देश्य में नारी की विविध समस्याओं और देश की महत्वपूर्ण समस्याओं का विश्लेषण किया है। पंचम अध्याय में उपन्यास में चित्रित समस्याओं के अंतर्गत नारी की समस्याएँ–विवाह की विविध समस्याएँ और नारी के सौंदर्य, स्त्री–पुरुष संबंध, नारी पर अत्याचार तथा नारी पर सामाजिक बंधन आदि समस्याओं का तो देश की महत्वपूर्ण समस्याओं में विभाजन, महँगाई की समस्या, देहांतों की स्थिति, भूख, बलिदान की भावना का अभाव, भ्रष्ट नेता और राजनीति, सरकारी अफसर और ठेकेदारों के भ्रष्टाचार, युवकों की उदासीनता आदि समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया है । उपसंहार में पहले अध्याय से लेकर पाँचवे अध्याय तक अनुशीलन करने पर जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उन्हें प्रस्तुत किये है ।

यह लघु शोध–प्रबंध मैंने मुधोजी महाविद्यालय, फलटण के हिंदी विभाग के आदरणीय गुरुवर्य प्रा.डॉ.राजेंद्र शहा जी के निर्देशन में किया है । उन्होंने सुयोग्य मार्गदर्शन कर मुझे प्रेरित ही नहीं किया बल्कि आत्मीयतासे अपने व्यस्त जीवन से समय देकर प्रोत्साहित किया । उनका मार्गदर्शन, आत्मीयता और सहयोग से मैं अपने लघु शोध–प्रबंध का कार्य संपन्न करने में सफल हो गयी हूँ । अतः उनके प्रति में अत्यंत कृतज्ञ हूँ ।

मेरे लघु शोध–प्रबंध के लिए समयोचित मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन देनेवाले श्रध्येय डॉ.गजानन सुर्वे, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, आदरणीय डॉ.पी.एस.पाटील अध्यक्ष, हिंदी विभाग शिवाजी

विश्वविद्यालय, कोल्हापूर, डॉ. अर्जुन चव्हाण, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर आदि है । इनके सहयोग तथा योगदान के लिए साभार स्मरण करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ । मेरे पति प्रा.शिवाजी नाळे, इनके सहयोग, मार्गदर्शन के बिना मैं यह कार्य पूरा नहीं कर पाती । उनके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ । इस लघु शोध–प्रबंध के टंकलेखन और सुयोग्य प्रस्तुति के लिए सौ. प्रितम महाजनी, प्रितम एजन्सीज्, सातारा तथा श्री. धनंजय कान्हेरे के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने ठीक समय पर लघु प्रबंध का टंकलेखन पूरा किया ।

मैंने आदरणीय गुरुवर्य **प्रा.डॉ. राजेंद्र झहा** जी के निर्देशन में लघु शोध–प्रबंध को मौलिक बनाने की कोशिश की हैं फिर भी कुछ त्रुटियाँ मेरे हाथ से रह जाना संभव है । इसके निर्दोषता का दावा तो मैं नहीं कर सकती । किंतु यदि सहृदय पाठकों को इस लघु शोध प्रबंध से रसास्वादन कराने में मुझे सफलता मिली तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक समझूँगी । धन्यवाद ।

शोध छात्रा

(कु. जयश्री रामचंद्र लोपकर)